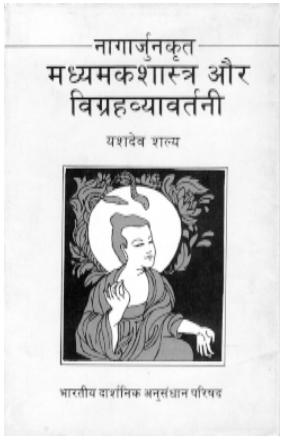

नागार्जुनकृत मध्यमकशास्त्र और विग्रहव्यावर्तनी

यशदेव शल्य

1990
124 pages
Hard Back
ISBN 81-208-0703-0
Rs 80

आधुनिक युग में देश और विदेश के अनेक विद्वान् बौद्ध दर्शन के अध्ययन की ओर आकृष्ट हुए हैं और परिणामतः प्रमुखतम बौद्ध दार्शनिकों में अग्रगण्य नागार्जुन पर भी बहुत–सा लेखन हुआ है। परन्तु जबकि अन्य सब लेखन सामान्य सैद्धान्तिक निर्वचन और व्याख्या के रुप में हुआ है। श्री शल्य ने एक दार्शनिक की भूमि से नागार्जुन की दार्शनिक युक्तियों की परीक्षा की है।
श्री शल्य ने इस पुस्तक में नागार्जुन को निरपेक्ष अभाववादी के रुप में, उनके 'शून्य' को वास्तविक शून्य के रुप में ही देखा है और दिखाया है कि किस प्रकार कोई इसके साथ भी निराशावादी के बजाय धार्मिक हो सकता है। किन्तु उन्होंने शून्यवाद को एक दार्शनिक युक्ति के रुप में अग्राह्म ही पाया है। इस सबसे महत्त्वपूर्ण है उनके द्वारा नागार्जुन द्वारा उद्भावित विरोधाभासों के आधार में निहित प्रतिज्ञाओं को प्रकट कर उनकी परीक्षा और परिहार करना जो इस पुस्तक को अन्यों से सर्वथा भिन्न और महत्त्वपूर्ण बनाता है ।

यशदेव शल्य का जन्म १६२८ में फरीदकोट (पंजाब) में हुआ। आरंभिक अध्ययन एक गुरुकुल में आठ वर्ष तक करने के उपरांत घर पर स्वशिक्षा।
१६४६ से साहित्यालोचनात्मक लेखों का प्रकाशन आरंभ और १६५१ में प्रथम पुस्तक पन्त का काव्य और युग का प्रकाशन। तब से अब तक सतत लेखन में लगे श्री शल्य की अन्य प्रकाशित पुस्तकें हैं मनस्तत्व, दार्शनिक विश्लेषण, ज्ञान और सत्, संस्कृतिः मानव–कर्तव्य की व्याख्या, विषय और आत्म, मनुष्य और जगत्, सत्ताविषयक अन्वीक्षा और समाज–तत्व। साथ ही श्री शल्य ने अनुभववाद, समकालीन दार्शनिक समस्याएं, समकालीन पाश्चात्य दर्शन, नृतत्त्व और समाजदर्शन, दर्शन समीक्षा और तत्त्वचिन्तन का सम्पादन किया। संप्रति १६८५ से उन्मीलन का सम्पादन।
१६५४ में अखिल भारतीय दर्शन परिषद् की स्थापना में सहयोग और १६८० तक क्रमशः इसके मंत्री और अध्यक्ष के रुप में इस का संचालन। हिन्दी समिति, उत्तर प्रदेश द्वारा दार्शनिक विश्लेषण १६६२ में डा० भगवानदास पुरस्कार से सम्मानित।